Date - 19/02/2025
Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह

मनोविज्ञान विभाग

महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester
Paper - CC - 7
Psychopathology

Topic :-

असामान्य व्यवहार के मनोसमाजिक कारण (Psychosocial Causes of Abnormal behaviour):

असामान्य व्यवहार के मनोसमाजिक कारण (Psychosocial Causes of Abnormal behaviour):

असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति में मनोसामाजिक कारकों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। मनीसामाजिक कारक से तात्पर्य वैसे विकासात्मक प्रभावों (Developmental influences) से होता है जो व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक रूप से इतना परेशान कर देता है कि वह सामाजिक वातावरण के साथ अपने आप को ठीक ढंग से समायोजित नहीं कर पाता है और धीरे-धीरे उसका व्यवहार असामान्य हो जाता है। कुछ ऐसे ही प्रमुख मनोसामाजिक कारव निम्न हैं जो व्यक्ति के व्यवहार को असामान्य बना देते हैं-

1 संज्ञानात्मक कारक (Cognitive Factor)

2 आरंभिक वंचन या आघात (Early Deprivation Trauma)

3 अपर्याप्त जनकता (Inadequate Parenting)

4 रोगात्मक पारिवारिक संरचना (Pathogenic Family Structures)

5 कुसमायोजी साथी संगी सम्बंध (Maladaptive Peer Relationship)

इन सबों का एक-एक कर वर्णन इस प्रकार है-

1 संज्ञानात्मक कारक (Cognitive Factors)-

संज्ञानात्मक कारकों को असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति में एक प्रमुख कारक के रूप में पहचान किया गया है। कोई व्यक्ति अपने बारे में क्या सोचता है, अपने आस पास के, वातावरण के बारे में क्या सोचता है तथा फिर इन दोनों के बीच के सम्बंध के बारे में क्या सोचता है, आदि से व्यक्ति का व्यवहार काफी हद तक प्रभावित तथा निर्देशित होता है। इन सभी तरह के सोचों को मनोविज्ञान की तकनीकी भाषा में संज्ञानात्मक नक्शा (Cognitive map) या स्कीमा कहा जाता है। आत्म-पहचान (Self-identity) संज्ञानात्मक नक्शा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिससे व्यक्ति अपने बारे में एक विशेष तरह की प्रतिमा बनाकर रखता है तथा उसका एक अपना खास तरह का विश्वास एवं भाव होता है। संज्ञानात्मक नक्शा के कुछ पहलू ऐसे होते हैं, जो व्यक्ति को दृढ़ (rigid) बनाते हैं। यही पहलू व्यक्ति में असामान्य व्यवहार उत्पन्न करने में सार्थक भूमिका निभाते हैं। व्यक्ति के आत्मन् में एक तरफ सूचनाओं को संसाधित करने तथा व्यवहार विकल्पों में से सही विकल्प या व्यवहार को चुनने के नियम संचित होत हैं तो दूसरी तरफ स्वयं आत्मन् (Self) इन नियमों का एक प्रतिफल होता है। आत्मन् के इन दोनों पहलुओं में से किसी भी एक पहलू में कमी या विचलन (deviation) होने से व्यक्ति का व्यवहार आसामान्य हो जाता है।
मिसकेंत (Mischel. 1986) के अनुसार जब व्यक्ति संज्ञानात्मक संगठन में उपयुक्त नियम तथा सिद्धान्त को किसी कारण में नहीं सीख पाता है, तो इससे उसमें भविष्य में मानसिक विकृति के होने की संभावना काफी तीव्र हो जाती है। एक अन्य अध्ययन के अनुसार मानसिक रूप से मंदित व्यक्तियों के करीब 75% व्यक्ति जिनमें मानसिक विकृति के होने की संभावना अधिक होती है बौद्धिक रूप से दबे इसलिए होते है क्योंकि उनके मस्तिष्कीय उत्तक (Brain tissue) दोषपूर्ण नहीं होते हैं बल्कि उनके तत्रिकीय उत्तक (Neural tissue) आधुनिक जिंदगी की जटिलताओं में निबटने के लिए ठीक ढंग से कार्यक्रमित (Programmed) नहीं होते हैं।
मिसकल (Mischel, 1977) ने कुछ ऐसे अधिगम आभूत क्षेत्रों (Learning-based areas) की पहचान किया है जिसे व्यक्ति अपने वाल्यावस्था में सीखता है और जो बाद में उनमें जिंदगी की मांगों के साथ समायोजन स्थापित करने में एक विशेष शैली (style) उत्पन्न कर देता है जो व्यस्कावस्था में भी प्रभावी रहता है। कुछ बच्चों में या शैली काफी प्रशंसनीय होता है परन्तु कुछ बच्चों में यह शैली निन्दनीय होता है, और जब यह व्यस्कावस्था में भो प्रभावी रहता है तो व्यक्ति जिंदगी की घटनाओं विशेषकर नाकारात्मक घटनाओं। (बीमारी, तलाक, वितोय कमी) का मूल्यांकन ठीक ढंग से नहीं कर पाता जिससे उसमें मानसिक विकृति विशेषकर विषादी प्रवृतियों (depressive tendencies) विकसित हो जाती है। ऐसा भी पाया गया है कि जब बच्चों में बहुत ज्यादा परस्परविरोधी अनुभूतियाँ होती हैं तो उसमें कोई संगत संज्ञानात्मक नक्शा (Coherent Cognitive map) नहीं विकसित होता और ऐसे पन्ने में आगे चलकर बहुव्यक्तित्व विकृति (Multiple personality Disorder or MPD) विकसित हो जाता है।

<u>**2** आरम्भिक वंचन या आघात **(Early Deprivation or Trauma)**</u>

व्यक्तित्व विकास के आम्भिक निर्माणवस्था (Formative period) में किसी कारणवश यदि बच्चों को वंचन का सामना करना पड़ता है या कुछ अघातक अनुभूतियों से दो-चार होना पड़ता है तो उनका व्यक्तित्व विकाम बाधित हो जाता है और उनको कई तरह के असामान्य व्यवहार उत्पन्न हो जाते हैं। वंचन (Deprivation) तथा अघातक अनुभूतियों (Traumatic experience) से सम्बद्ध कुछ प्रमुख कारक निम्नांकित हैं जिससे कि आसामान्यता उत्पन्न होता है।

(*a*) संस्थानीकरण *(Institutionalization)*

(b) घर में वंचन *(Deprivation in home)*

(c) वाल्यावस्था का सदमा या मानसिक आघात *(Childhood* Trauma)

इन सबों का वर्णन इस प्रकार है।

(*a)* संस्थानीकरण *(Institutionalization*)-इससे तात्पर्य बच्चे का पालन-पोषण घर में न करके किसी संस्थान जैसे अनाथालय, आवासीय स्कूल में करने से होता है। ऐसे संस्थान में घर की अपेक्षा हार्दिकता (Warmth). दैहिक सम्पर्क, सामाजिक तथा सामाजिक उत्तेजनाएँ, बौद्धिकरण आदि काफी कम होता है। इन सबका परिणाम यह होता है कि बच्चे में अकेलापन, सांवेगिक उदासीनता, विषाद तथा समायोजन सम्बद्ध कठिनाइयाँ विकसित होने की संभावना काफी बढ़ जाती है। इसके अलावे इनमें भाषण एवं भाषा विकास भी काफी मंदित होता है। वेरेस एवं ओवर्स (Beres & Obers, 1950) ने संस्थानीकरण के दीर्घकालीन प्रभावों का अध्ययन 38 किशोरों पर किया और पाया कि उनमें से चार मनोविक्षिप्त (Psychosis) थे, 21 व्यक्तित्व या चारित्रिक विकृति (Character disorder) से ग्रस्त थे, चार मानसिक रूप से मंदित थे तथा दो स्नायुविकृत थे। केवल 7 ही ऐसे थे जिनमें संतोषजनक व्यक्तिगत समायोजन (Satisfactory personal adjustment) थे। इस परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि एक साल की आयु से कम उम्र में भी संस्थान में पलने वाले बच्चों में व्यस्क होने पर कमजोर अन्तवैयक्तिक सम्बंध तथा समाजविरोधी व्यवहार की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है।

(*b)* घर में वंचन *(Deprivation in home*)-कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जो घर में होते हुए भी उन्हें अपने माता-पिता का पर्याप्त प्यार नहीं मिलता है। उनमें भी आगे चलकर कई तरह के असामान्य व्यवहार विकसित हो जाते हैं। इस तरह के जनकीय वंचन (Parental deprivation) की व्याख्या कई तरह के विचारधाराओं के तहत किया गया है जिसमें फ्रायड, स्कीनर, सुल्लीभान द्वारा किया गया व्याख्या प्रमुख है। फ्रायड के अनुसार ऐसे बच्चों का मनोलैगिक विकास मुखवस्था (Oral stage) में आकर स्थिरीकृत हो सकता है, स्कीनर के अनुसार इनमें पुनर्बलन के अभाव में आवश्यक कौशल विकसित नहीं हो पाता, सुल्लोभान के अनुसार इनमें अन्य लोगों के साथ घनिष्ठता तथा चिन्ता मुक्त स्नेह के विकास में बाधा पहुँचती है। इसके अलावे रोजर्स के अनुसार ऐसे बच्चों में विकसित हो रहे आत्म-सिद्धि प्रवृति में प्रतिरक्षात्मक तत्वों (defensive elements) का समावेश हो जाता है। ये सभी सिद्धान्त इस बात का समर्थन करते हैं कि ऐसे बंचन से उनका विकास दोषपूर्ण हो जाता है और उनमें असामान्य व्यवहार की ओर उन्मुखता बढ़ जाती है।
घर में जनकीय वंचन से उत्पन्न होने वाले असामान्य व्यवहार के अध्ययन का प्रारम्भ रिब्बल (Ribble. 1945) द्वारा किया गया। इन्होंने ने पाया कि बच्चों को माता द्वारा तिरस्कार तथा उदासीनता दिखाने पर बच्चों में कम ही उम्र में तनावग्रस्तता एवं नाकारात्मक व्यवहार विकसित हो जाते हैं जिससे आगे चलकर उनमें समाज-विरोधी व्यवहार विकसित होने की संभावना काफी बढ़ जाती है। बलाई (Bullard, 1967) ने पाया है कि जनक बच्चों में सांवेगिक विकृति विकासाला कोष, मानसिक मन्दन का विकासे हो जाता है। पेटरसन (Patterson, 1979) ने अपने अध्ययन में पाया है कि ऐसे बच्चों में आव का विकास हो जाता है। संख्या) अधिक पाया जाता है। एट्स (जो अपने आ ऐसे बच्चे दूसरे के साथ अर्थपूर्ण सम्बंध बनाने में अपने को असमर्थ पाते हैं जो वयस्क आत्मास्नेही व्यक्ि ऐसे बच्चे stic personality) का एक प्रमुख शीलगुण है। जनकीय वंचन से अन्य आसामान्य व्यवहार से उत्पन्न होते हैं जिनमें अत्यधिक डर, घर से भाग जाना तथा बौद्धिक हास आदि प्रमुख है।
होते हैं जिवस्था की सदमा या मानसिक आघात (Childhood Trauma) वाल्यावस्था में जान माता-पित कसे मृत्यु, अप्रत्याशित लैंगिक अनुभव जैसे सदमापूर्ण अनुभुतियों होती है तो इससे उनका व्यक्तित्व विकास कुप्रभावित हो जात है और उनमें जीवन की समायोजी माँगों (adjustive demands) से निबटने की क्षमता का हास हो जाता है, और तब उनमें असामान्य व्यवहार तेजी से विकसित होता है। बारनेस एवं प्रोजेन (Bames & Projen, 1985) ने अपने अध्ययन से उसक बातों का समर्थन किया है। इसके अलावे ओवेन्स (Ovens, 1989) ने भी इस तथ्य का समर्थन किया है।

<u>3 अपर्याप्त जनकता (Inadequate Parenting)</u>

अनेक अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि जब माता-पिता का बच्चों के साथ किया गया अन्तःक्रियत (Interaction) मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपर्याप्त होता है तो इससे बच्चों का व्यक्तित्व विकास कुप्रभावित हो जाता है और उनमें असामान्य व्यवहार उत्पन्न होने की संभावना काफी तीव्र हो जाती है। कुछ ऐसे ही अपर्याप्त पैटर्न निम्न है जिनसे की असामान्यता उत्पन्न होता है।

(a) अतिसूरक्षा *(Over protection)*

(b) अत्यधि वंचन *(Excessive restriction)*

(c) अवास्तविक माँग *(Unrealistic demands)*

(d) अतिअनुमतिबोधकता *(Overpermissiveness)*

(e) दोषपूर्ण अनुशासन *(Faulty discipline)*

(f) अपर्याप्त एवं अतार्किक संचार *(Inadequate and Irrational Communication)*

(g) आसक्ति *(Attachment)*

इन सबों का वर्णन इस प्रकार है।

(*a)* अतिसुरक्षा *(Over Protection*)-इससे तात्पर्य माता-पिता द्वारा बच्चों की क्रियाओं को इस ढंग से मॉनीटर करने से होता है कि बच्चों द्वारा किए जाने वाले कार्यों को उन्हें न करने देकर माता-पिता खुद करके उन्हें एक तरह से कार्य करने के उत्तरदायित्व से सुरक्षा प्रदान करते हैं। माता-पिता द्वारा बच्चों को इस तरह का अतिसुरक्षा प्रदान करने से उनका सामान्य व्यक्तित्व विकास दोषपूर्ण हो जाता है और उसमें असामान्य प्रवृतियाँ विकसित हो जातीं हैं। जैसे-जेनकिन्स (Jenkins, 1968) ने अपने अध्ययन में पाया है कि अतिचिंतत किशोरों की माताएँ अतिसुरक्षा प्रदान करने वाली थी। पोजनास्की (Poznanski, 1973) ने पाया है कि इस तरह के वातावरण में पलने वाले बच्चों में दुर्भीति (phobia) विकसित हो जाती है।

(b) अत्यधिक वंचन *(Excessive Restriction)*-इससे तात्पर्य बच्चों पर माता-पिता द्वारा कुछ खास तरह के नियमों का पालन करवाने के लिए दबाव देने से होता है। हालांकि इस तरह के दबाव से जहाँ बच्चों को उत्तम ढंग से नियंत्रित रहने एवं समाजीकृत व्यवहार करने की प्रेरणा मिलती है तो वहीं दूसरे तरफ उनमें डर, निर्भरता, दब्यूपना, दमित विद्वेष (Repressed hostility) तथा बौद्धिक द्वास आदि भी विकासरे तराते हैं। इस तथ्य की समर्थन बामरिंड (Baumrind, 1971) एवं मेगारगी (Megargee 1966) के अध्ययनों से हुआ है।

(c*)* अवास्तविक माँग *(Unrealistic Demands)*-माता-पिता द्वारा बच्चों से अवास्तविक माँग या प्रात्वयाशाएँ हे काफी ऊँचा या नीचा, विक्कृत या सख्त कुछ भी हो सकता है, को रखने पर बच्चों में हीनता एवं अपयांप्तता (inferiority or inadequacy) का भाव विकसित हो जाता है जो उनमें मानसिक विकृति के होने की सम्भावना को बड़ा देता है। इस स्मिथ समर्थन कपरस्मिथ (Coopersmith, 1967) तया का विकल के होने की सम्भावना को कसे होता है। कूपरस्मिथ (Coopersmith, 1967) ने अपने अध्ययन में पाया है कि ऐसे बच्चों में उपलब्धि तथा आत्म-सम्मान् का स्तर काफी निम्न होता है जिससे धीरे-धीरे उसमें नाकारात्मक आत्म-संप्रत्यय विकसित हो जाता है। परिणामतः उनमें मानसिक विकृति के होने की सम्भावना काफी बढ़ जाती है।

(*d)* अतिअनुमतिबोधकता *(Overpermissiveness*)-इससे तात्पर्य माता-पिता की उस प्रवृति से होता है जिसके कारण से वे बच्चों की छोटी से छोटो आवश्वयकता या इच्छा की पूर्ति के लिए काफी सजग रहते हैं। ऐसे वातावरण में पलाने वाले बच्चे प्रायः स्वार्थी, दुष्ट, असहयोगी एवं अपनी बात को हर हाल में मनवाले वाले होते हैं। सियर्स (Sears, 1962) ने एक अध्ययन में पाया है कि यदि घर में माता-पिता की ओर से उदारता अधिक होती है एवं बच्चों में अनुशासन की कमी होती है तो आगे चलकर ऐसे बच्चों में समाज विरोधी व्यवहार को प्रवृति अधिक तीव्र

हो जाती है। वामरिंड (Baumrind. 1975) के अनुसार ऐसे बच्चे वयस्क होने पर अधिकारियों के प्रति अधिक विद्रोहात्मक व्यवहार दिखलाते हैं, क्योंकि इनका काम करवाने का अपना विशेष ढंग होता है। ऐसे बच्चे अन्तवैयक्ति सम्बंध तो जल्द ही विकसित कर लेते हैं परंतु वे ऐसे लोगों को ठीक उसी ढंग से शोषण करना प्रारम्भकर देते हैं जिस ढंग से वे घर पर अपने माता-पिता का करते थे। परन्तु इसमें उन्हें उतनी सफलता नहीं मिल पाती जिससे उनमें असंतोष एवं कुंठा विकसित हो जाता है जो उनके व्यवहार को कुसमायोजी बना देता है।

(e*) दोषपूर्ण अनुशासन *(Faulty Discipline*)-माता-पिता द्वारा बच्चों को अनुशासित करने में असंगत व्यवहार दिखलाये जाने से भी बच्चे में असामान्यता का विकास होता है। जैसे एक ही तरह के व्यवहार दिखलाने पर एक दिन बच्चों को दंड दूसरे दिन पुरस्कार देना एक ऐसा ही असंगत व्यवहार है। इससे बच्चे यह नहीं सौख पाते है कि उपयुक्त व्यवहार क्या है? परिणामतः इनमें अक्रामकता, अदयालुता आदि प्रवृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। वामारिंड (Baumrind, 1975) के एक अध्ययन के अनुसार यदि माता-पिता काफी सख्त अनुशासन का पालन करते हैं तो इससे उनमें दूसरों में विश्वास की कमी, डर, माता-पिता के प्रति घृणा आदि का विकास हो जाता है।

(f*) अपर्याप्त एवं अतार्किक संचार *(Inadequate and Inrrational Communication*)-कुछ परिवार में बच्चों द्वारा माता-पिता से कोई प्रश्न करने पर उन्हें डाँट देना अपर्याप्त संचार का उदाहरण है तथा माता-पिता द्वारा प्रश्नों का दिया गया उत्तर का बच्चों के लिए तर्कसंगत नहीं होना अतार्किक संचार का उदारहण है। इन दोनों तरह के संचार को दोषपूर्ण संचार माना जाता है। इस तरह के संचार से सम्बद्ध अध्ययनों में यह देखा गया है कि इस तरह का संचार मध्य तथा उच्च सामाजिक स्तर वाले परिवार की अपेक्षा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले परिवार में अधिक होता है जिससे इनमें आवश्यक कौशलों एवं क्षमताओं का विकास मंदित हो जाता है एवं उनमें कुसमायोजी व्यवहार विकसित होने की सम्भावना अधिक हो जाती है। कारसन एवं सानील्लो (Carson & Sanillow, 1992) तथा गोल्डस्टीन एवं स्ट्रैकंन (Goldstein & Strachan, 1987) के अध्ययन के अनुसार अधिकतर मनोविदाली रोगियों के परिवार में इसी तरह का दोषपूर्ण संचार पाया जाता है।

(*g)* आशक्ति *(Attachment*)-वालवाय (Bowlby. 1952) जो इस कारक को असामान्यता की उत्पत्ति में प्रवल कारक मानते हैं. ने कहा है कि बच्चे अपने माता-पिता या अन्य कोई प्रतिस्थापित व्यक्ति के साथ घनिष्ठ आसक्ति विकसित कर लेते हैं। और जब यह आसक्ति सामान्य न होकर चिंता उत्पन्न करने वाला होता है तो बच्चों में अविश्वास एवं कुंठा की उत्पत्ति होती है जिसकी परिणति असामान्य व्यवहार के रूप में होता है। चिंता उत्पन्न काने वाले आक्ति तभी उत्पन्न होता है जब माता-पिता बच्चों के साथ असंगत एवं असहयोगात्मक व्यवहार करते हैं। एनेसवर्थ (Ainsworth. 1988) के अध्ययन के अनुसार चिंता उत्पन्न करने वाला आसक्ति से बच्चों में निर्भरण
एवं तिरस्कृत होने का भाव भी विकसित होता है जिससे बच्चों को आगे चलकर समाज विरोधी व्यवहार करने प्रेरणा मिलती है। तब कहा जा सकता है कि अपर्याप्त जसकत सामान्य व्यक्तित्व विकास बाधित हो जाता है एवं उसमें तरह-तरह के असामान्य व्यवहार उत्पन्न हो जान

<u>**4** रोगात्मक पारिवारिक संरचना **(Pathogenic Family Structure)**</u>

इससे तात्पर्य वैसे पारिवारिक संरचना से होता है जिसमें कई तरह के पारिवारिक व्यता (Famil disturbances) इतनी अधिक मात्रा में होती है कि उससे परिवार के सदस्यों का समायसीजन बुरी तरह से प्रचित जाता है और व्यक्ति असामान्य व्यवहार के दायरे में गिरफ्त हो जाता है। इस सम्बंध में हुए अध्ययनों के आधा निम्न तीन तरह के रोगात्मक पारिवारिक संरचना की पहचान की गयी है जिससे असामान्य व्यवहार उत्पन्न होता है।

(*a)* बेमेल परिवार *(Discordant Family)*

(b) विक्षुब्ध परिवार *(Disturbed Family)*

(c) विघटित परिवार *(Disrupted Family)*

इन सबका वर्णन इस प्रकार है।

(*a)* बेमेल परिवार *(Discordant Family*)-इससे तात्पर्य वैसे परिवार से होता है जिसमें माता-पिता में से कोई एक या दोनों को ही एक दूसरे से कोई संतुष्टि नहीं रह जाती है। उनमें अक्सर विवाद होते रहता है तथा पारिवारिक समस्याओं पर उनके विचार भिन्न ही नहीं बल्कि कट्टर विरोधी होते हैं। इनके मूल्य भी परस्पर विरोधी होते हैं तथा इनमें एक दूसरे के प्रति परस्पर आक्रमकता अधिक होती है। ये लोग जानबूझकर एक दूसरे को विहार रहते हैं जिससे इनमें कुंठा उत्पन्न होती है। कारसन एवं बुचर (Carson & Butcher. 1992) के अनुसार ऐसे परिवा में पलने वाले बच्चों एवं वयस्क दोनों में ही समाजविरोधी व्यवहार विकसित होने की सम्भावना अधिक होती है।

(b*)* विक्षुब्ध परिवार *(Disturbed Family*)-इससे तात्पर्य वैसे परिवार से होता है जिसमें माता-पिता में से कोई एक या फिर दोनों इतना सनकी या झक्की तथा असामान्य ढंग से व्यवहार करते हैं कि पूरे घर का वातावरण सांवेगिक तनाव से भरा रहता है। कौक्स एवं कौक्स (Cox & Cox, 1997) के अनुसार ऐसे परिवार के बच्चों में विषादी प्रवृतियाँ (Depressive tedencies) अधिक होतीं हैं। लिड्ज तथा उनके सहयोगियों (Lidz. el. at.. 1955) ने दो अन्य पारिवारिक संरचना की पहचान की है जो बेमेल परिवार तथा विक्षुब्ध परिवार से मिलता-जुलता है। ये पारिवार हैं-वैवाहिक विच्छिन्न परिवार (Marital schism family) तथा वैवाहिक वैषम्य परिवार (Marital skewed family)। वैवाहिक विच्छिननन परिवार में पति तथा पत्नी दोनों ही कई कारणों से बहुत तीव्र मानसिक संघर्ष से जुझते हैं जो वेमेल परिवार के समान है। तथा वैवाहिक वैषम्य परिवार में पति-पत्नी दोनों हो कुछ अनोखा विश्वास तथा व्यवहार बार-बार करके अपने बीच होने वाल खुल्म-खुल्ला संघर्ष से बचते रहते हैं। यह विक्षिब्ध परिवार के काफी सदृश है। लिड्ज ने पाया कि ऐसे परिवार में मनोविदालिता विकसित होने की संभावना काफी तीव्र होती है।

(*c)* विघटित परिवार *(Disrupted family)*-विघटित परिवार से तात्पर्य वैसे परिवार से होता है जो कई कारणों जैसे मृत्यु, सम्बंध विच्छेद (Divorce), अलगाव (Separation) तथा अन्य समान कारणों से अधूरा रहता है। ऐसे परिवार के बच्चों को पर्याप्त स्नेह नहीं मिलता जिससे इनका व्यक्तित्व विकास बाधित हो जाता है और उनमें समायोजन सम्बद्ध कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जातीं हैं जो धीरे-धीरे उनके व्यवहार को असामान्य बना देता है। माता पिता या दोनों की असमय मृत्यु से समायोजन-सम्बद्ध कठिनाईयाँ अधिक उत्पन्न होती है। शायद बहुत कम ही केसेज में बच्चे इस मानसिक आघात को झेलकर एक समायोजित व्यक्तित्व विकसित कर पाते हैं। हेथरिंगटन, कीक्स एवं कौक्स (Hetherington, Cox & Cox, 1988) ने अपने अध्ययन में पाया है कि माता की तुलना में पिता की अनुपस्थिति से बच्चों में असामान्यता अधिक विकसित होती है। वालरस्टीन (Wallerstein, 1984) के अनुसार माता-पिता का सम्बंध विच्छेद उत्पन्न होने से बच्चों में असुरक्षा तथा तिरस्कान (Wallerstein, 1984) के अनुसार जो धीरे-धीरे उनके व्यवहार को असामान्य बना देता है। रूटर (Rutter, 1981) ने अपने विकसित होते सम्बंध विच्छेदित माता-पिता या दोनों में अलगाव की स्थिति में बच्चे में अपराधिक प्रवृत्ति अधिक बढ़ जाती है।

<u>5 कुसमायोजी साथी-संगी का सम्बंध **(Maladaptive Peer Relationship**</u>)

कुसमायोजी संगी-साथी अपने दोस्तों के व्यवहार पर इस ढंग का प्रभाव डालते हैं कि उनका भी व्यवहार

असामान्य हो जाता है। कोई (Coie, 1990) द्वारा किए गये अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि जब बच्चों के अपने साथियों के बीच लोकप्रियता न मिलकर कुछ कारणों से तिरस्कार मिलता है तो इसमें सामाजिक विलगाव उत्पन्न होता है जिससे बच्चे सामाजिक व्यवहार के अन्य नियमों को नहीं सीख पाते। परिणामतः ऐसे बच्चों को आवृत्तिय सामाजिक असफलता प्राप्त होती है जिससे उनका आत्म-सम्मान टूट जाता है और वे असामान्यता की ओर उन्मुख हो जाते हैं। इस तथ्य का समर्थन डोज (Dodge, 1983), पुटल्लाज एवं गौट्टमैन (Putallaz &

Gottmen, 1983) के अध्ययनों से भी होता है। अभी हाल में कुपरस्मीडर, कोई तथा डोज (Kupertmidt, Coie & Dodgs. 1990) के एक सर्वे में पाया गया है कि वाल्यावस्था में कुसमायोजी साथी-संगी से सम्बद्ध सामाजिक समस्याओं का सहसम्बंध वयस्कावस्था के कुसमायोजी विकृतियों विशेषकर मनोविदालिता (Schizophrenia), स्कूल या कॉलेज छोड़ना अपराध आदि से अधिक पाया गया है।

<u>निष्कर्षतः तब कहा जा सकता है कि अनेक तरह के मनोवैज्ञानिक कारक है जिससे मानसिक विकृति उत्पन्न होता है। इनमें आरम्भिक वंचन, अपर्याप्त जनकता **(Inadequate parenting)** तथा रोगात्मक पारिवारिक संरचना **(Pathological family structure)** तुलनात्मक रूप से अधिक महत्वपूर्ण कारक है।</u>